इकाई 1 विद्यालयी पाठ्यचर्या में भाषा का स्थान

संरचना

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 पाठ्यचर्या

1.4 प्राथमिक स्तर पर भाषा शिक्षण

1.5 भाषा कौशलों का विकास

1.6 त्रिभाषा-सूत्र

- 1.6.1 प्रथम भाषा ($भा_1$)
- 1.6.2 द्वितीय भाषा ($भा_2$)
- 1.6.3 तृतीय भाषा ($भा_3$)

1.7 सारांश

1.8 इकाई के अंत में अभ्यास

1.9 अभ्यासांतर्गत पूछे गए प्रश्नों के उत्तर

1.1 प्रस्तावना

विद्यालयी पाठ्यचर्या में भाषा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। प्राथमिक स्तर पर यह और भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इसी स्तर पर बालक पहली बार भाषा में औपचारिक अनुदेशन प्राप्त करता है इससे पहले, वह घर में मूलत: अनौपचारिक रूप से भाषा सीखता है। चूँकि बालक विद्यालय में अन्य सभी विषयों को भाषा के माध्यम से सीखता है, अत: भाषा में यह औपचारिक अनुदेशन पाठ्यचर्या के अन्य क्षेत्रों के अधिगम में उसकी सहायता करता है। विद्यालय में अन्य विषयों को सीखने के माध्यम के रूप में तो भाषा की महत्ता है ही, साथ ही यह आत्माभिव्यक्ति में भी बालक की सहायता करती है।

जैसे-जैसे बालक बड़े होते हैं, उन्हें अपने विचारों, अनुभूतियों एवं रायों को अभिव्यक्त करने की आवश्यकता होती है। यह आत्माभिव्यक्ति बालक के 'आत्म', उसके व्यक्तित्व एवं वैयक्तिकता के विकास का आधार है। अत: भाषा, शिक्षार्थी की निम्नलिखित रूप में सहायता करती है - (i) विद्यालयी विषयों को सीखने में, (ii) विद्यालय एवं उससे बाहर दूसरों के साथ संप्रेषण में, (iii) दैनिक जीवन की स्थितियों में एवं (iv) अन्य क्षेत्रों की संकल्पनाओं को सीखने में।

भाषा को भली प्रकार से सीखने का अर्थ है - भाषा के चार आधारभूत कौशलों अर्थात् सुनने, बोलने, पढ़ने एवं लिखने के कौशलों को सीखना। शिक्षार्थियों में इन चार आधारभूत कौशलों को विकसित करने में शिक्षक के रूप में आपकी महत्त्वपूर्ण भूमिका है। अपने कार्य को प्रभावी ढंग से करने के लिए वांछनीय है कि आप (i) विद्यालयी पाठ्यचर्या में भाषा के महत्त्व को समझें और (ii) अपने शिक्षार्थियों में भाषा कौशलों का विकास करने के लिए प्रभावी युक्तियों के प्रयोग को जानें। प्रस्तुत इकाई इन दिशाओं में आपकी सहायता का प्रयास हैं।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप:

- भाषा शिक्षण के महत्त्व का वर्णन कर सकेंगे;
- प्राथमिक विद्यालयी पाठ्यचर्या में भाषा के स्थान को स्पष्ट कर सकेंगे;
- प्राथमिक स्तर पर भाषा शिक्षण के उद्देश्यों का उल्लेख कर सकेंगे;
- शिक्षार्थियों में भाषा कौशल विकसित करने के लिए विभिन्न युक्तियाँ अपना सकेंगे;
- त्रिभाषा-सूत्र की व्याख्या कर सकेंगे; और
- प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय भाषा शिक्षण के महत्त्व में विभेद कर सकेंगे।

1.3 पाठ्यचर्या

शिक्षा का चरम लक्ष्य है - शिक्षार्थी का सर्वांगीण विकास। अत: पाठ्यचर्या की अभिकल्पना एवं निर्माण इस प्रकार होना चाहिए जिससे इस चरम लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके। स्पष्ट है कि आप यह जानना चाहेंगे कि 'पाठ्यचर्या' का ठीक-ठीक क्या अर्थ है? पाठ्यचर्या विद्यालय द्वारा बालक को प्रदत्त अनुभवों का कुल योग है। इसमें न केवल विद्यालय में पढ़ाए जाने वाले विषय अथवा पाठ्यक्रम सम्मिलित हैं अपितु इसमें शिक्षार्थी के अधिगम में संवृद्धि के लिए विद्यालय द्वारा आयोजित अन्य क्रियाकलाप भी शामिल हैं। इस संदर्भ में विद्यालय पाठ्यचर्या के एक अंग के रूप में भाषा एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। प्राथमिक पाठ्यचर्या में विभिन्न विषयों के महत्त्व के अभिनिर्धारण में हम उनके लिए कुछ अलग-अलग अधिभार मान लेते हैं, उन्हीं संभावित अनुमानित अधिभारों को चित्र (1.1) में दर्शाया गया है। तथापि, विभिन्न विषयों को जो अधिभार दिया गया है, वह अस्थायी है और पढ़ाई जाने वाली विषय-सामग्री को ध्यान में रखते हुए उसका पुन: वितरण किया जा सकता है।

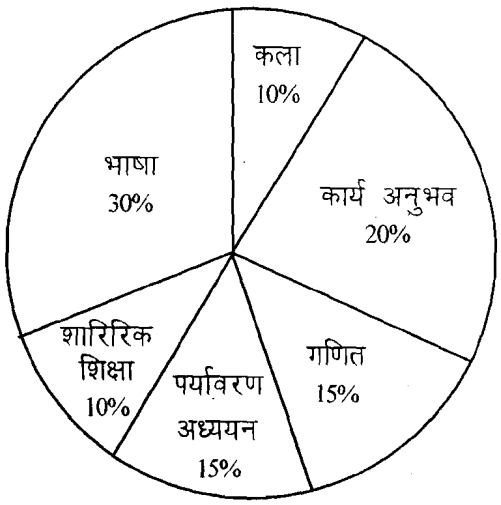

चित्र 1.1

स्रोत : ई.वी.एस. (EVS) पर्यावरण अध्ययन

क्या आप बता सकते हैं कि प्राथमिक विद्यालय की पाठ्यचर्या के संदर्भ में ऊपर दिए गए चित्र में किस विषय को सर्वाधिक अधिभार दिया गया है?

निश्चित रूप से भाषा को 30% अधिभार मिला है, जबकि अन्य विषयों का अधिभार 10% से 20% के बीच है। इससे आपको विद्यालय की पाठ्यचर्या में भाषा शिक्षण के महत्त्व का बोध हो जाएगा।

अभ्यास

टिप्पणी: अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

1. आपके विचार में निम्नलिखित कथनों में से जो कथन सत्य हैं उनके लिए 'सत्य' पर घेरा लगाइए तथा जो असत्य हैं उनके लिए 'असत्य' पर घेरा लगाइए:

   क) विद्यालयी पाठ्यचर्या में भाषा का महत्त्वपूर्ण स्थान नहीं है। (सत्य/असत्य)

   ख) भाषा दूसरों के साथ संप्रेषण में बालक की सहायता करती है। (सत्य/असत्य)

   ग) भाषा शिक्षार्थी के अधिगम में सहायता नहीं करती। (सत्य/असत्य)

   घ) प्राथमिक विद्यालयों में बालकों में चार आधारभूत भाषा कौशलों का विकास करना आवश्यक है। (सत्य/असत्य)

   च) शिक्षा का चरम लक्ष्य है - शिक्षार्थी का सर्वांगीण विकास। (सत्य/असत्य)

   छ) विद्यालयी पाठ्यचर्या में भाषा को सबसे कम अधिभार मिला है। (सत्य/असत्य)

1.4 प्राथमिक स्तर पर भाषा शिक्षण

जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि बालक प्राथमिक विद्यालयी स्तर पर सचेतन रूप से भाषा सीखना प्रारंभ करते हैं वे विद्यालय में आने से पहले से ही अपने परिवार के सदस्यों से अंत:क्रिया में मौखिक भाषा का अर्जन कर लेते हैं। परंतु यह अधिगम अनौपचारिक होता है और बहुत संरचित नहीं होता।

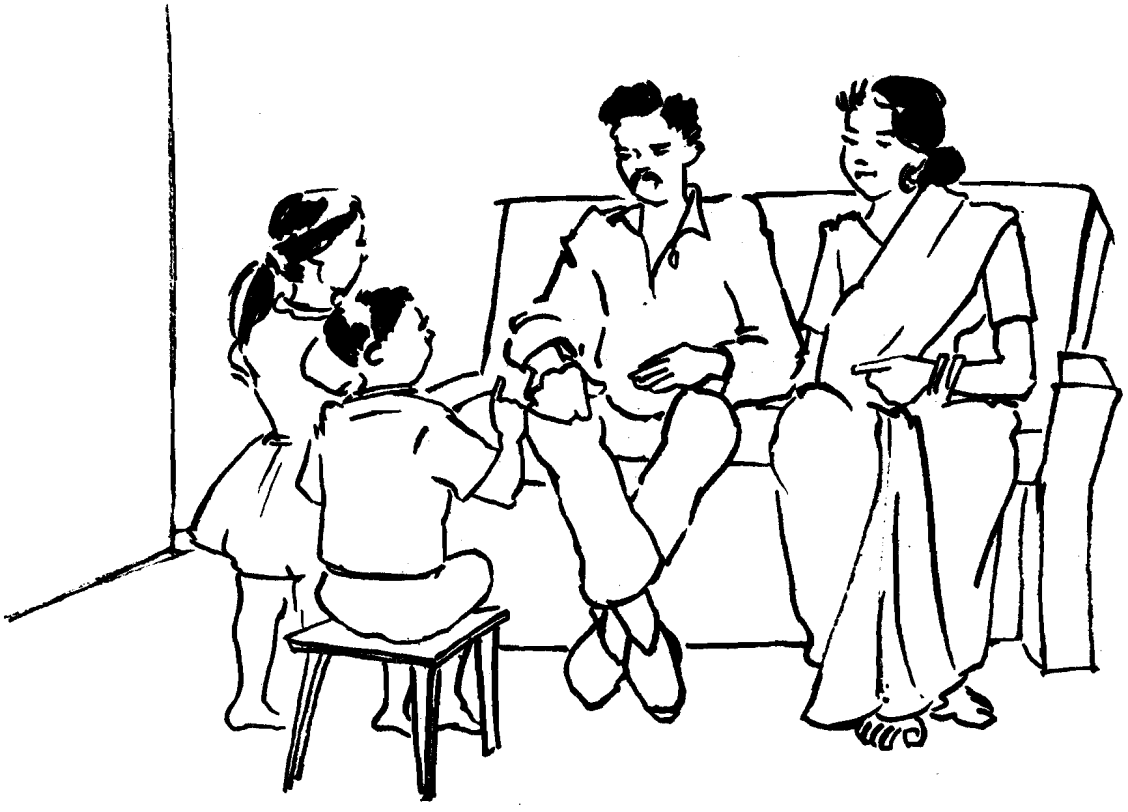

जब एक बार बालक विद्यालय में प्रविष्ट हो जाता है तो वह कक्षा-स्थिति में भाषा को बड़े नियोजित एवं व्यवस्थित रूप से सीखता है। विद्यालयी पाठ्यचर्या में भाषा के अधिगम अनुभवों को सुनियोजित रूप में प्रस्तुत किया जाता है। भाषा शिक्षण को व्यवस्थित रूप में नियोजित करने के लिए यह वांछनीय है कि शिक्षक होने के नाते आप प्राथमिक स्तर पर भाषा शिक्षण के प्रमुख उद्देश्यों को समझ लें।

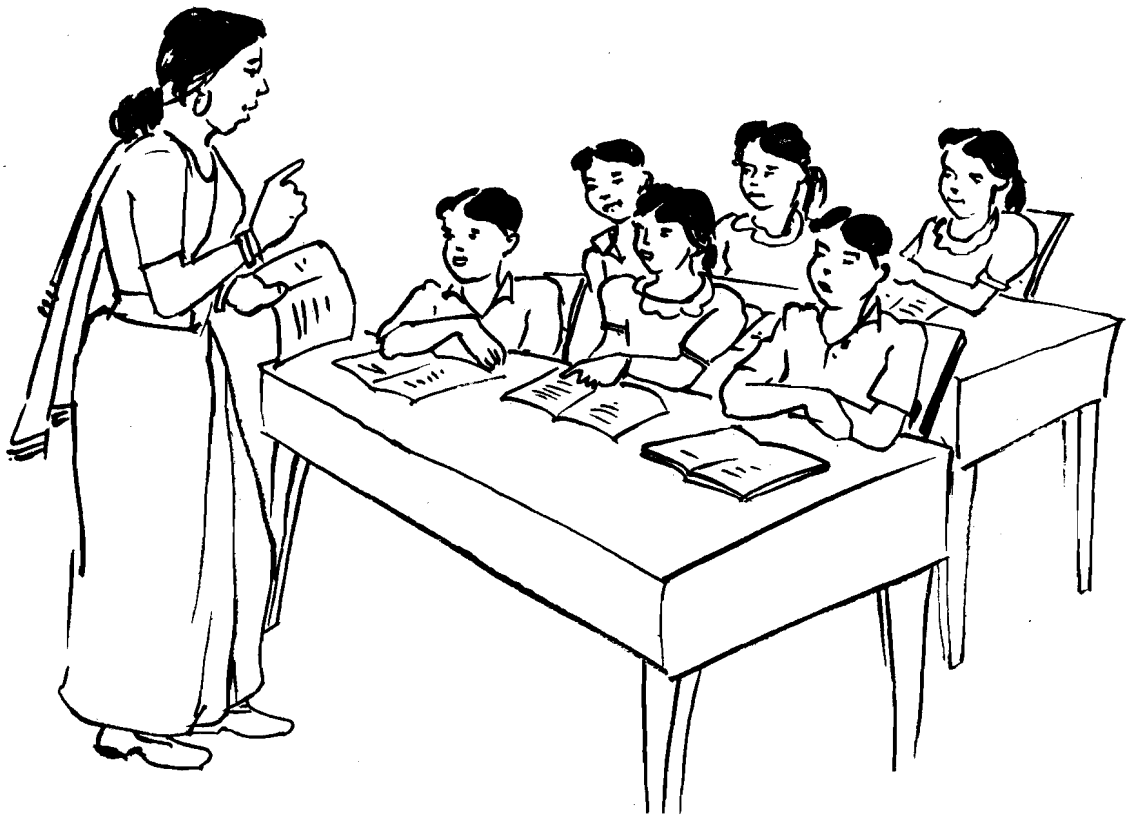

चित्र 1.3: कक्षा में बैठे हुए शिक्षार्थी

भाषा शिक्षण करते समय आपका उद्देश्य होना चाहिए कि आपके शिक्षार्थी:

- सुनकर समझ सकें,
- अनौपचारिक एवं औपचारिक परिस्थितियों में प्रभावी रूप से बोल सकें,
- पढ़कर समझ सकें, एवं विभिन्न प्रकार की पठन-सामग्री का आनंद ले सकें;
- तार्किक क्रम एवं सृजनात्मक रूप में साफ़-साफ़ लिख सकें; और
- विभिन्न संदर्भों में व्याकरण का व्यावहारिक प्रयोग कर सकें।

अत: स्पष्ट है कि एक शिक्षक के रूप में आपको भाषा के आधारभूत कौशल - सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना के विकास में शिक्षार्थी की सहायता करनी होगी। भाषा शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य है - बेहतर समझ एवं प्रभावी संप्रेषण के लिए इन कौशलों का विकास। यद्यपि हमने सुनना, बोलना, पढ़ना एवं लिखना की अलग-अलग कौशलों के रूप में चर्चा की है, परंतु वास्तव में ये कौशल अंतर्संबंधित अथवा अन्योन्याश्रित हैं। उदाहरण के लिए - सुनना एवं पढ़ना

हम सुनते भी हैं, जब हम लिखते हैं, तो हम पढ़ते भी हैं और जब हम मुखर पठन करते हैं तो हम बोलते भी हैं। आपने स्वयं भी अनेक बार ऐसा अनुभव किया होगा।

अभ्यास

टिप्पणी : अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

2. यदि आप नीचे दिए गए कथन से सहमत हैं तो 'स' पर घेरा लगाइए और यदि आप असहमत हैं तो 'अ' पर घेरा लगाइए:

   क) बालक विद्यालय में प्रवेश से पहले भाषा नहीं सीखता है। (स/अ)

   ख) शिक्षार्थी विद्यालय में सुनियोजित रूप में भाषा सीखते हैं। (स/अ)

   ग) कक्षा में प्रस्तुत अधिगम-अनुभव नियोजित नहीं होते। (स/अ)

   घ) बालक घर में भाषा को व्यवस्थित रूप से सीखना प्रारंभ करता है। (स/अ)

   च) भाषा शिक्षण के समय शिक्षक को यह अपेक्षा करनी चाहिए कि बच्चे सुनकर समझ सकें। (स/अ)

   छ) शिक्षार्थी भाषा सीखने के बाद उसे प्रभावी रूप से नहीं बोल सकते हैं। (स/अ)

   ज) भाषा शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य आधारभूत भाषा कौशलों का विकास करना है। (स/अ)

   झ) भाषा कौशल अंतर्संबंधित नहीं होते हैं। (स/अ)

1.5 भाषा कौशलों का विकास

आप यह जानने के लिए उत्सुक होंगे कि भाषा कौशल किस प्रकार विकसित किए जा सकते हैं। आधारभूत भाषा कौशलों के विकास में शिक्षार्थियों की सहायता करने में शिक्षक के रूप में आपकी महत्त्वपूर्ण भूमिका है। इस संदर्भ में, याद रखें कि किसी भी कौशल-विकास कार्यक्रम में उन युक्तियों को अपनाया जाता है जो सुपरिचित होती हैं। तब ही उन्हें प्रभावशाली रूप से कार्यान्वित किया जा सकेगा तथा वे शिक्षार्थियों को सक्रिय सहभागिता के लिए अभिप्रेरित कर सकेंगी। आइए, देखें कि वे कौन-सी परिचित एवं संगत युक्तियाँ हैं, जो प्राथमिक स्तर पर भाषा कौशलों को प्रभावी रूप से सीखने के लिए शिक्षार्थियों को सक्षम बना सकती हैं।

नीचे तालिका में कुछ युक्तियाँ सुझाई गई हैं:

विधि/युक्ति	क्रियाकलाप	कौशल
1. कहानी-कथन	• किसी प्रसिद्ध कहानी का चयन करना जिसमें शब्द और वाक्य बहुत सरल हों तथा परिस्थिति कक्षा विशेष के शिक्षार्थियों के लिए परिचित और सामान्य हो	
	• रोचक परिस्थिति का निर्माण करते हुए अत्यंत स्वाभाविक रूप में शिक्षार्थियों को कहानी सुनाना	सुनकर समझना

		• कुछ प्रचलित संवादों को समाविष्ट करने का प्रयत्न करना	संवादों को समझना
		• शिक्षार्थियों से - सरल वाक्यों को दोहराने (मौखिक रूप में) के लिए कहना	बोलना
		- कुछ सरल प्रश्न पूछना	हाँ अथवा नहीं में उत्तर देना
		- 'कौन', 'कब' और 'कहाँ' वाले कुछ प्रश्न पूछना	व्यक्तियों, समय/ स्थान एवं परिस्थिति के संबंध में विचारों को समझना
	2. नाटक	• प्रसिद्ध एवं रोचक विषय का चयन करना तथा उस पर आलेख तैयार करना	
		• विभिन्न पात्रों के लिए शिक्षार्थियों को चुनना एवं विभिन्न पात्रों की भूमिका के लिए उनका नामोल्लेख करना	
		• उन्हें किसी विशेष संवाद बोलने के लिए प्रोत्साहित करना	सुनना एवं बोलना
		• शिक्षार्थियों से: - संवादों पर आधारित सरल प्रश्नों के उत्तर पूछना	
		- कुछ परिचित शब्दों को दोहराने के लिए कहना	
		- संवाद से संबंधित सरल वाक्यों को लिखने के लिए कहना	लिखना
		- घटनाओं के (प्रत्यास्मरण) एवं 'क्या' और 'कैसे' वाले प्रश्नों के उत्तर देने के लिए कहना	विचारों, घटनाओं, व्यक्तियों आदि को समझना
	3. प्रश्नोत्तर	• 'कौन', 'क्या' और 'कैसे' वाले प्रश्न पूछना	बोलना, लिखना एवं बोधन
	4. शब्द-निर्माण खेल	• पूरी कक्षा के समूह बनाना, प्रत्येक समूह से कहना कि वह किसी एक वर्ण (उदाहरण 'क') से प्रारंभ होने वाला शब्द बोले	समझना, बोलना एवं बोधन

5.	व्यक्तियों/वस्तुओं के बारे में पहेली	• क्षेत्र में परिचित पहेलियाँ पूछना	समझना, बोलना एवं बोधन
6.	निबंध लेखन	• निबंध लिखने में शिक्षार्थियों का मार्गदर्शन करना	लिखना एवं बोधन
7.	पत्र-लेखन	• माता-पिता, भाई, बहन अथवा मित्र को पत्र लिखने में शिक्षार्थियों का मार्गदर्शन करना	लिखना
8.	घटनाओं का वर्णन	• पुस्तक में से कोई एक विषय पढ़ना एवं शिक्षार्थियों से कहना कि वे अपने शब्दों में उसका वर्णन करें।	सुनना एवं बोलना
		• विषय पर आधारित प्रश्नों के उत्तर देने के लिए कहना	बोलना एवं लिखना

हम इन युक्तियों पर बाद में अधिक विस्तार से चर्चा करेंगे। किंतु आप कक्षा में इन युक्तियों का उपयोग करते समय उनका इस प्रकार प्रयोग करने का प्रयत्न करें जिससे भाषा की शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया शिक्षार्थियों के लिए एक आनंदमय एवं सुखद क्रियाकलाप बन सके।

अभ्यास

टिप्पणी: अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

3. कक्षा-स्थिति में किन आधारभूत कौशलों का ध्यान रखा जाना चाहिए?

i) .....

ii) .....

iii) .....

iv) .....

4. ऐसी युक्तियों का प्रयोग क्यों करना चाहिए जिनसे आप और शिक्षार्थी दोनों ही परिचित हों?

i) .....

.....

ii) .....

.....

5. कॉलम 'क' में कुछ युक्तियाँ दी गई हैं और कॉलम 'ख' में भाषा कौशल दिए गए हैं। कॉलम 'क' में दिए गए उन कौशलों पर सही (✓) का निशान लगाइए जिनका विकास किसी विशेष युक्ति द्वारा किया जा सकता है:

'क'	'ख'			
युक्तियाँ	सुनना	बोलना	पढ़ना	लिखना
i) कहानी-कथन				
ii) नाटक				
iii) प्रश्नोत्तर				
iv) शब्द-निर्माण खेल				
v) पहेलियाँ				
vi) निबंध लेखन				
vii) पत्र-लेखन				
viii) घटनाओं का वर्णन				

1.6 त्रिभाषा-सूत्र

आपके लिए यह जानना वांछनीय है कि प्राथमिक स्तर पर कितनी भाषाएं पढ़ाई जाती हैं। इस संदर्भ में, भारत सरकार ने एक सूत्र अपनाया है, जिसे त्रिभाषा-सूत्र के नाम से जाना जाता है इस सूत्र के अनुसार प्रत्येक शिक्षार्थी को निम्नलिखित भाषाएँ सीखनी होंगी:

1. मातृभाषा अथवा क्षेत्रीय भाषा।
2. संघ की राजभाषा अथवा संघ की सह राजभाषा (जब तक वह रहे) संघ की राजभाषा हिंदी है तथा सह राजभाषा अंग्रेजी है।
3. आधुनिक भारतीय भाषा अथवा विदेशी भाषा जो उपर्युक्त (1) एवं (2) के अंतर्गत न हो तथा जो शिक्षण माध्यम के रूप में प्रयुक्त भाषा से अलग हो।

भारत एक बहुभाषी देश है। संविधान के अनुसार भारत की 18 भाषाएं हैं। अत: यदि कोई व्यक्ति देश के विभिन्न भागों के व्यक्तियों के साथ अंत:क्रिया करना चाहता है तो उसके लिए आवश्यक है कि उसे एक से अधिक भाषाओं की जानकारी हो। यदि कोई व्यक्ति केवल अपनी मातृभाषा ही जानता है तो वह केवल अपने राज्य के व्यक्तियों से ही संप्रेषण कर सकता है। इसका यह अर्थ है कि वह व्यक्ति स्वयं को दूसरे क्षेत्रों/राज्यों एवं अन्य भाषाओं से पूरी तरह अलग कर रहा है। एक शिक्षार्थी जिसने केवल अपनी मातृभाषा सीखी है, वह दूसरे क्षेत्रों एवं भाषाओं के बारे में तब तक जानकारी प्राप्त नहीं कर सकता जब तक कि उसका अनुवाद उसकी अपनी भाषा में न किया जाए। परिणामस्वरूप, उसकी शिक्षा बहुत सीमित हो जाती है।

त्रिभाषा-सूत्र में इस कमी को ध्यान में रखा गया है। अब इस सूत्र के अंतर्गत प्रत्येक शिक्षार्थी के लिए विद्यालय में तीन भाषाएँ सीखना अपेक्षित है यानी - प्रथम भाषा ($भा_1$), द्वितीय भाषा ($भा_2$) तथा तृतीय भाषा ($भा_3$)।

1.6.1 प्रथम भाषा ($भा_1$)

हम बचपन में जो भाषा सीखते हैं वह सामान्यत: हमारे माता-पिता, परिवार के सदस्यों एवं हमारे आस-पास के अन्य व्यक्तियों द्वारा बोली जाती है। यह हमारी प्रथम भाषा अथवा $भा_1$ के नाम से जानी जाती है। चूंकि इस भाषा को हम अच्छी तरह जानते हैं तथा सामान्यत: प्रयोग में लाते हैं इसलिए सरकार ने यह निर्णय लिया कि प्राथमिक स्तर पर शिक्षण का माध्यम व्यक्ति की अपनी क्षेत्रीय भाषा हो। शिक्षक के नाते आपने यह अनुभव किया होगा कि प्राथमिक स्तर पर क्षेत्रीय भाषा अथवा बालक की मातृभाषा के द्वारा ही ज्यादातर शिक्षण किया जाता है।

प्रथम भाषा किसी विशेष औपचारिक शिक्षण के बिना ही मित्रों एवं परिवार के सदस्यों के साथ अंत:क्रिया द्वारा स्वाभाविक रूप से ग्रहण कर ली जाती है। तथापि अपनी प्रथम भाषा में प्रभावी रूप से संप्रेषण कर सकने के बावजूद हम में से अधिसंख्य को भाषा की सभी ध्वनियों, वर्णों अथवा उसके व्याकरण की पूरी जानकारी नहीं होती। इसका कारण यह है कि इसे हम अनौपचारिक रूप से सीखते हैं इसीलिए विद्यालय में प्रथम भाषा का औपचारिक शिक्षण किया जाता है।

1.6.2 द्वितीय भाषा ($भा_2$)

शिक्षा का एक उद्देश्य है - शिक्षार्थी को विभिन्न स्थितियों के संपर्क में लाना एवं उसमें ऐसी योग्यताओं का विकास करना जिससे वह हर संभव स्रोत से ज्ञान प्राप्त कर सके और उसे दूसरों के साथ बांट सके। इस दृष्टि से शिक्षार्थी के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह द्वितीय भाषा ($भा_2$) को सीखे, जो कि हमारे देश में सामान्यत: हिंदी अथवा अंग्रेजी है।

द्वितीय, भाषा किसी विशिष्ट प्रयोजन, यथा-सूचनाओं को एकत्र करने एवं ज्ञान को ग्रहण करने के लिए, सचेतन एवं सोद्देश्य सीखी जाती है। द्वितीय भाषा की ध्वनियों, वर्णों एवं व्याकरण को तभी सही ढंग से सीखा जा सकता है जब उन्हें शिक्षक द्वारा सुविचारित ढंग से पढ़ाया गया हो और शिक्षार्थियों द्वारा सचेत रूप से सीखा गया हो। त्रिभाषा-सूत्र के अंतर्गत, द्वितीय भाषा ($भा_2$) प्राथमिक विद्यालयी पाठ्यचर्या के बाद के चरण में पढ़ाई जाती है - जब बालक ने एक भाषा अर्थात भाषा ($भा_1$) को पहले ही अच्छी तरह सीख लिया होता है।

हम अपने दैनिक जीवन की स्थितियों में अपने भावों एवं विचारों को अभिव्यक्त करने तथा संप्रेषण के लिए प्रथम भाषा का प्रयोग करते हैं। दूसरी ओर, निजी स्थितियों के अतिरिक्त अन्य स्थितियों में द्वितीय भाषा का प्रयोग किया जाता है।

1.6.3 तृतीय भाषा ($भा_3$)

आप यह पूछ सकते कि उस स्थिति में क्या होता है जब शिक्षार्थी की प्रथम भाषा हिंदी एवं द्वितीय भाषा अंग्रेजी होती है और कुछ स्थितियों में इनमें से कोई भी भाषा उसकी सहायता नहीं कर सकती। उदाहरण के लिए, बालक की मातृभाषा खासी है और वह अंग्रेजी को द्वितीय भाषा के रूप में सीखता है।

जब यह बालक बिहार के एक गाँव में जाता है, तो वहाँ संभव है कि वह उन व्यक्तियों के साथ न तो अपनी प्रथम भाषा (खासी) और न ही द्वितीय भाषा (अंग्रेज़ी) में बातचीत कर सके। क्योंकि हो सकता है कि बिहार के उस गाँव के व्यक्ति न तो खासी जानते हों और न अंग्रेज़ी ही। ऐसी स्थिति में, दूसरे व्यक्तियों के साथ संप्रेक्षण अथवा अंत:क्रिया कठिन हो जाती है और कभी-कभी असंभव भी। इस स्थिति में तृतीय भाषा ($भा_3$) की एक महत्त्वपूर्ण भूमिका हो जाती है।

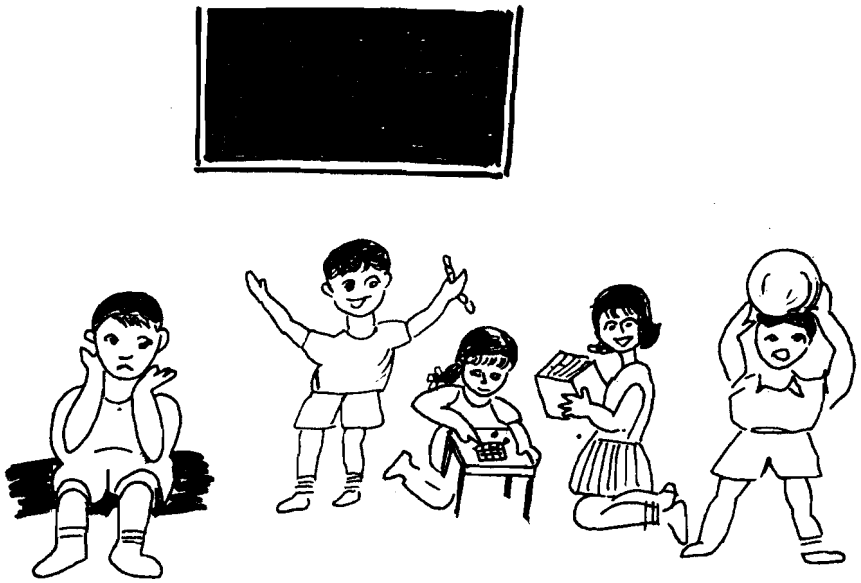

चित्र 1.4 : एक स्थिति जहाँ एक शिक्षार्थी असहाय बैठा है, जबकि दूसरे शिक्षार्थी सक्रिय रूप से अंत:क्रिया कर रहे हैं

त्रिभाषा-सूत्र के अंतर्गत द्वितीय भाषा प्रारंभ करने के एक वर्ष बाद तृतीय भाषा ($भा_3$) का शिक्षण प्रारंभ किया जाता है। अत: तीसरी भाषा विद्यालय के परवर्ती चरण में पढ़ाई जाती है और वह भी बहुत थोड़े समय के लिए, क्योंकि इसकी आवश्यकता सीमित संदर्भ में होती है, अर्थात् ऐसी सामाजिक स्थिति में जहाँ संप्रेषण में न तो बालक की प्रथम भाषा और न ही द्वितीय भाषा उसकी सहायता करती है। फिर भी, आप यह ध्यान रखें कि विभिन्न भाषाओं का एक समान क्रोड क्षेत्र होता है। शिक्षार्थियों को प्रारंभिक कक्षाओं के दौरान उस आधारभूत क्रोड क्षेत्र को अवश्य सीखना चाहिए। यह आधारभूत क्रोड भाषा की ध्वनियों, वर्णमाला के अक्षरों, तथा भाषा के व्याकरण के महत्त्वपूर्ण पक्षों से संबंधित होता है। चाहे प्रथम भाषा हो, द्वितीय भाषा हो अथवा तृतीय भाषा, शिक्षार्थियों को इन क्रोड क्षेत्रों का बोध करा देना चाहिए।

अभ्यास

टिप्पणी: अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

6. प्रत्येक कथन के सामने कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए:

   क) भारत में ..... ने त्रिभाषा-सूत्र को अपनाया। (राज्य सरकार, केंद्र सरकार, जनता)

   ख) भारत ..... भाषाओं का देश है। (12, 14, 18)

   ग) शिक्षार्थी को विद्यालय में ..... भाषाएँ सीखनी चाहिए। (दो, तीन, चार)

   घ) ..... भाषा किसी क्षेत्र विशेष में बोली एवं प्रयोग की जाती है। (प्रथम, द्वितीय, तृतीय)

   च) सरकार ने यह निर्णय लिया कि प्राथमिक स्तर पर ..... भाषा शिक्षण का माध्यम होनी चाहिए। (प्रथम, द्वितीय, तृतीय)

   छ) भारत में सामान्यत: हिंदी अथवा अंग्रेजी..... है। ($भा_1$, $भा_2$, $भा_3$)

   ज) ..... स्वाभाविक रूप से सीखी जाती है। ($भा_1$, $भा_2$, $भा_3$)

   झ) ..... भाषा सचेतन रूप से सीखी जाती है। (प्रथम, द्वितीय, तृतीय)

   त) ..... भाषा अनौपचारिक रूप से ग्रहण की जाती है। (प्रथम, द्वितीय, तृतीय)

   ठ) ..... विद्यालय में $भा_2$ ..... स्तर पर पढ़ाई जाती है। (प्रारंभिक, परवर्ती)

1.7 सारांश

इस इकाई में हमने प्राथमिक स्तर पर भाषा शिक्षण के विभिन्न मुद्दों पर प्रकाश डाला है, यथा:

- भाषा की महत्त्वपूर्ण भूमिका न केवल हमारे दैनिक जीवन में सामान्य रूप से किए जाने वाले संप्रेषण में है, अपितु विद्यालयों में शिक्षण के माध्यम के रूप में भी है।
- शिक्षार्थियों में भाषा के आधारभूत कौशल - सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना का विकास किया जाना चाहिए।
- त्रिभाषा-सूत्र का उद्देश्य विद्यालय में शिक्षार्थी को विभिन्न स्तरों पर तीन भाषाओं के प्रयोग करने की योग्यता प्रदान करना है, जिससे वह अन्य परिस्थितियों में प्रभावी रूप से संप्रेषण कर सके।

1.8 इकाई के अंत में अभ्यास

1. आपकी प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय भाषाएँ कौन-सी हैं?
2. किसी भी अन्य भाषा से पहले बालक को मातृभाषा क्यों सिखाई जाती है?
3. प्रथम एवं द्वितीय भाषा शिक्षण के बीच कम से कम दो भिन्नताएँ बताइए।
4. यदि आपको तीसरी भाषा चुनने के लिए कहा जाए तो आप कौन-सी भाषा चुनेंगे? अपने उत्तर के लिए दो कारण बताइए।

1.9 अभ्यासांतर्गत पूछे गए प्रश्नों के उत्तर

1. (क) असत्य (ख) सत्य (ग) असत्य
   (घ) सत्य (च) सत्य (छ) असत्य
2. (क) असहमत (ख) सहमत (ग) असहमत
   (घ) असहमत (च) सहमत (छ) असहमत
   (ज) सहमत (झ) असहमत
3. (i) सुनना (ii) बोलना (iii) पढ़ना (iv) लिखना
4. (i) शिक्षक इन क्रियाओं का प्रभावी उपयोग कर सकते हैं।
   (ii) शिक्षार्थी सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए अभिप्रेरित होंगे।
5. (i) सुनना, बोलना, लिखना
   (ii) सुनना, बोलना, लिखना, पढ़ना
   (iii) सुनना, बोलना, लिखना
   (iv) सुनना, बोलना
   (v) बोलना
   (vi) लिखना
   (vii) लिखना
   (viii) सुनना, बोलना, लिखना
6. (क) केंद्र सरकार (ख) 18 (ग) तीन
   (घ) प्रथम (च) प्रथम (छ) $भा_2$
   (ज) $भा_1$ (झ) द्वितीय/तृतीय (ट) प्रथम
   (ठ) परवर्ती